

भारतीय कृषि शोध एवं शिक्षा की जन्मस्थली पूसा : एक सिंहावलोकन



Pusa the Birth Place of Indian Agricultural Research & Education: An overview



**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार) - 848 125**

**DR. RAJENDRA PRASAD CENTRAL AGRICULTURAL UNIVERSITY
PUSA, SAMASTIPUR (BIHAR)-848125**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर।
कृषि शिक्षा अनुसंधान धरोहर संग्रहालय
का उद्घाटन:-

डॉ. त्रिलोचन महापात्र

सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग-
महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली
एवं

गरिमामयी उपस्थिति:-

डॉ. रमेशचन्द्र श्रीवास्तव डॉ. अशोक कुमार सिंह
कुलपति निदेशक

रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली
के कर-कमलों द्वारा दिनांक-03 दिसम्बर 2020

को सम्पन्न हुआ

डॉ. ए. के. सिंह

निदेशक, ई.अनु.सं.रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा

यादों के झड़ोखे से

- 1784 : जुलाई 5 को घोड़साल की स्थापना के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 1500 सिक्का सालाना मालगुजारी पर पूसा की जमीन का अधिग्रहण किया।
- 1798 : बूढ़ी गंडक नदी के उस पार स्थित बख्तियारपुर गाँव का बिना मालगुजारी में वृद्धि किये पूसा क्षेत्र में विलीनीकरण।
- 1874 : जानवरों में ग्लैण्ड सम्बन्धी बीमारी के संक्रमण से 90 वर्ष पुरानी घोड़साल व्यवस्था समाप्त।
- 1876 : पूसा क्षेत्र में अल्पतम वर्षा (मात्र 11") से अकाल की स्थिति।
- 1877 : मेसर्स बेग इनलप कम्पनी (कलकत्ता) को तम्बाकू उत्पादन के लिए पूसा के सम्पूर्ण अधिगृहित क्षेत्र का ठेका दिया गया।
- 1893 : बूढ़ी गंडक नदी की बाढ़ से पूसा क्षेत्र प्रभावित।
- 1896 : पूसा में डाकघर की स्थापना।
- 1897 : बंगाल सरकार द्वारा मेसर्स बेग इनलप कम्पनी (कलकत्ता) का ठेका रद्द।
- 1898 : बूढ़ी गंडक और बागमती नदी की बाढ़ से पूसा क्षेत्र को अपूर्णतया क्षति।
- 1902 : पूसा में मवेशियों के नस्ल सुधार, दूध से उत्पादित खाद्य पदार्थों को तैयार करने एवं शिक्षण संस्थान के साथ कृषि अनुसंधान संस्थान स्थापित करने की योजना बनायी गई।
- 1903 : दिसम्बर 26 को बंगाल सरकार द्वारा पूसा की अधिगृहित सम्पूर्ण क्षेत्र पर भारत सरकार का स्वामित्व स्थापित।
- : पूसा में एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना के लिए एक अमेरिकी विश्व-मानवता-प्रेमी मिस्टर हेनरी फिप्स द्वारा 30 हजार पाउण्ड का दान प्राप्त।
- 1905 : अप्रैल माह में भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन का पूसा आगमन एवं एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट के मुख्य भवन (फिप्स लेबोरेटरी) का शिलान्यास।

TIME LINE RETROSPECTION

- 1784 : On July 5th, acquisition of Pusa land was done by the East India Company revenue at 1500 coins annually for the establishment of horse breeding stud farm.
- 1798 : The village Bakhtiyarpur situated across the river was merged with Pusa region without increasing the Malguzari.
- 1874 : The 90-years old horse breeding stud farm was closed due to infection of Gland disease in animals.
- 1876 : Occurrence of famine due to extreme low rainfall (only 11 ") in Pusa region.
- 1877 : M/s Beg Dunlop Co. (Calcutta) received the entire acquired area of Pusa on contract basis for tobacco production.
- 1893 : Pusa region affected by the flood of Budhi Gandak river.
- 1896 : Establishment of Post office at Pusa.
- 1897 : Cancellation of the contact of M/s Beg Dunlop Co. (Calcutta) by the Government of Bengal.
- 1898 : Irreparable damage to Pusa region due to flood of Budhi Gandak and Bagmati rivers.
- 1902 : A plan was mooted to improve the cattle breeds of Pusa, to prepare milk-based foods and to set up an Agricultural Research Institute with an Educational branch.
- 1903 : On December 26, the entire area of Pusa occupied by the Government of Bengal was transferred to the Government of India.
A donation of 30,000 pounds was received by Mr. Henry Phipps, an American philanthropist, for the establishment of the Agricultural Research Institute at Pusa.
- 1905 : In April, Viceroy and Governor General of India Lord Curzon arrived to Pusa and laid the foundation stone of main building of Agricultural Research Institute (Phipps Laboratory).

यादों के झड़ोखे से

- 1905 : एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट (ए.आर.आई.) पाँच विभागों (कृषि एवं मवेशी प्रजनन, रसायन, आर्थिक वनस्पति, कीट एवं कवक विज्ञान) के साथ शिक्षा एवं शोध संस्थान के रूप में स्थापित।
- : भारतीय राज्यों के वरीय कृषि पदाधिकारियों को स्नातकोत्तर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करने की व्यवस्था।
- 1907 : ए.आर.आई. पूसा में एक अतिरिक्त जीवाणु विभाग खोला गया।
- 1911 : एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूसा का नाम बदलकर इम्पीरियल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च किया गया।
- 1912 : नवम्बर 1 को पूसा उच्च विद्यालय की स्थापना की गई।
- 1914 : बिहार और उड़ीसा सरकार द्वारा उच्च विद्यालय, पूसा को सरकारी मान्यता प्राप्त हुई।
- 1916 : पूसा के कृषि वैज्ञानिक सर अलवर्ट हॉवार्ड दम्पति द्वारा विकसित गेंहूँ की उन्नत प्रजातियाँ (पूसा-4 और पूसा-12) को लगातार 4 वर्षों (1916-1920) तक विश्व अन्न प्रदर्शनी में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 1919 : इम्पीरियल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च का नाम एक बार पुनः बदलकर इम्पीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूसा हुआ।
- : आई.ए.आर.आई., पूसा में शुगर ब्यूरो की स्थापना।
- 1920 : आई.ए.आर.आई., पूसा में पशु स्वास्थ्य पर शोध कार्य आरम्भ।
- 1923 : आई.ए.आर.आई., पूसा में द्वि-वर्षीय स्नातकोत्तर प्रशिक्षण व्यवस्था आरम्भ।
- 1932 : ईश्वर अनुसंधान संस्थान, मुशहरी (मुजफ्फरपुर) में स्थापित।
- 1934 : आई.ए.आर.आई., पूसा का मुख्य भवन (फिफ्स लेबोरेटरी) भूकम्प से क्षतिग्रस्त।
- 1935 : बूढ़ी गंडक और बागमती नदियों की बाढ़ से पूसा क्षेत्र को अप्रत्याशित क्षति।
- : भारत सरकार द्वारा आई.ए.आर.आई., पूसा को दिल्ली स्थानान्तरित करने का निर्णय।
- : पूसा स्थित भारत सरकार की सम्पूर्ण चल एवं अचल सम्पत्ति मात्र दो लाख पाँच हजार रुपये में बिहार सरकार को प्राप्त।

TIME LINE RETROSPECTION

- 1905 :** The Agricultural Research Institute (ARI) was established as an Education and Research Institute with five departments (Agriculture and Cattle Breeding, Chemistry, Economic Botany, Entomology and Mycology).
- :** Provision for providing postgraduate training courses to the Senior agricultural officials of the Indian states.
- 1907 :** An additional Bacterial division was opened in ARI.
- 1911 :** The Agricultural Research Institute, Pusa, was renamed as Imperial Institute of Agricultural Research.
- 1912 :** November 1, Pusa High School was established
- 1914 :** High School, Pusa was recognized by the Government of Bihar and Orissa.
- 1916 :** Improved varieties of wheat (Pusa-4 and Pusa-12), developed by Pusa's agricultural scientist Sir Alvert Howard couple, received the first prize at international level in world food exhibition for 4 consecutive years (1916-1920).
- 1919 :** The Imperial Institute of Agricultural Research was once again renamed as Imperial Agricultural Research Institute, Pusa.
- :** Establishment of Sugar Bureau at IARI, Pusa.
- 1920 :** Research work on animal health started at IARI, Pusa.
- 1923 :** Two-year postgraduate training system started at IARI Pusa.
- 1932 :** Sugarcane Research Institute was established at Musahari (Muzaffarpur).
- 1934 :** IARI, Pusa's main building (Phipps Laboratory) was damaged by earthquake.
- 1935 :** Flood of Budhi Gandak and Bagmati rivers unexpected caused extensive damage to Pusa.
- :** Decision of Government of India to shift IARI, Pusa to Delhi.
- :** All movable and immovable property and assets transferred to Government of Bihar for a sum of Rs. 2,05,000/-

यादों के झड़ोखे से

- 1936 : आई.ए.आर.आई. पूसा का दिल्ली स्थानान्तरण और 7 नवम्बर को दिल्ली में इंस्टीट्यूट, के नये भवन का उद्घाटन।
- : आई.ए.आर.आई., पूसा, बोटैनीकल सब-स्टेशन के नाम से कृषि शोध की एक शाखा पूसा में रखी गई।
- : ईख अनुसंधान संस्थान, मुशहरी (मुजफ्फरपुर) से स्थानान्तरित होकर पूसा में स्थापित।
- : जुलाई 29, डा. एफ.जे.एफ. शॉ, निदेशक, आई.ए.आर.आई., पूसा ने की आत्महत्या।
- 1942 : अगस्त 12, पूसा में लाल ऑफिस पर तिरंगा झण्डा फहराया गया।
- : अगस्त 13, हाई स्कूल पूसा के छात्रावास में आन्दोलनकारियों की गुप्त बैठक।
- : अगस्त 15, पूसा क्षेत्र के आन्दोलनकारियों द्वारा पलैक्स हाउस अग्निकाण्ड।
- : अगस्त 31, अंग्रेजों द्वारा तेपरी गाँव में हृदय विदारक अग्निकाण्ड।
- 1947 : पूसा में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापित।
- 1952 : अक्टूबर 2, पूसा प्रखण्ड को कम्युनिटी प्रोजेक्ट स्कीम का दर्जा प्राप्त। पूसा में वी.एल.डब्लू. ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना।
- 1953 : बागमती और बूढ़ी गंडक नदियों की बाढ़ से पूसा क्षेत्र की भयानक स्थिति।
- 1954 : आनुक्रमिक बाढ़ (बागमती और बूढ़ी गंडक) से पूसा क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति।
- 1955 : क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, पूसा में स्थापित।
- 1957 : अक्टूबर 25, ईख अनुसंधान संस्थान, बिहार के पूसा स्थित प्रयोगशाला भवन का श्री कृष्ण सिंह, मुख्यमंत्री, बिहार सरकार द्वारा उद्घाटन।

TIME LINE RETROSPECTION

- 1936 :** IARI, Pusa was transferred to Delhi and inauguration of the new building of the Institute in Delhi on 7th November.
- :** IARI, Pusa left a branch of agricultural research naming as Pusa Botanical sub-Station.
- :** Relocation of Sugarcane Research Institute, Mushahari (Muzaffarpur) to Pusa.
- :** July 29, Dr. F.J.F. Shaw, Director IARI, Pusa committed suicide.
- 1942 :** August 12, Tricolor flag hoisted at the Red Office in Pusa.
- :** August 13, Secret meeting of Agitators in High School, Pusa hostel.
- :** August 15, Flax House, Pusa set a fire by Agitators.
- :** August 31, A heartbreaking fire in Tepri village by white men.
- 1947 :** Teacher's Training College established at Pusa.
- 1952 :** October 2, Pusa Block received the status of Community Project Scheme.
- :** V.L.W. Training school established at Pusa.
- 1953 :** Flood of Bagmati and Budhi Gandak ravaged the Pusa region.
- 1954 :** Successive flood (Bagmati and Budhi Gandak) further damaged the Pusa region irreparably.
- 1955 :** Regional Agricultural Research Center established at Pusa.
- 1957 :** October 25, the Laboratory building of Sugarcane Research Institute, Pusa, Bihar was inaugurated by Shri Krishna Singh, Chief Minister, Government of Bihar.

यादों के झड़ोखे से

- 1960 : तिरहुत कृषि महाविद्यालय झेली की स्थापना। क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र पूसा का झेली में स्थानांतरण।
- 1964 : बूढ़ी गंडक का बाँध पूसा में टूट और सरकारी संस्थानों सहित पूसा प्रखण्ड में जान-माल की अपूरणीय क्षति।
- 1969 : पूसा स्थित बोटैनिकल सब-स्टेशन का नाम बदलकर क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र हुआ।
- 1970 : दिसम्बर 3, डा. राजेन्द्र प्रसाद के जन्मदिवस के अवसर पर राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय का अस्थायी मुख्यालय पशु चिकित्सालय, पटना में बना।
- 1971 : अक्टूबर 21, उमा पाण्डेय महाविद्यालय पूसा की स्थापना।
- 1975 : क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, पूसा का उन्नयन कर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय स्टेशन, पूसा नाम दिया गया।
- 1980 : बिहार में एक और कृषि विश्वविद्यालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची की स्थापना की गयी।
- 1981 : दिसम्बर 6, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासकीय भवन का डॉ. जगन्नाथ मिश्र, मुख्यमंत्री (बिहार सरकार) द्वारा उद्घाटन।
- 2010 : राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय का विभाजन कर एक और कृषि विश्वविद्यालय, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर भागलपुर बनाया गया।
- 2016 : अक्टूबर 7, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय का उन्नयन, डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के नाम से किया गया।

TIME LINE RETROSPECTION

- 1960 : Establishment of Tirhut College of Agriculture at Dholi.**
- : Transfer of Regional Agricultural Research Center from Pusa to Dholi.**
- 1964 : Breach of dam on Budhi Gandak in Pusa and irreparable loss of life and property in Pusa block including government institutions.**
- 1969 : Botanical sub-Station at Pusa was renamed as Regional Research Center.**
- 1970 : December 3, on the occasion of birth anniversary of Dr. Rajendra Prasad, the temporary headquarter of Rajendra Agricultural University was emplaced at Animal Hospital, Patna.**
- 1971 : October 21, Uma Pandey College, Pusa was established.**
- 1975 : The Regional Research Center, Pusa was upgraded as Regional Station of the Indian Agricultural Research Institute, Pusa, New Delhi.**
- 1980 : Another Agricultural University was established in Bihar as Birsa Agricultural University, Ranchi.**
- 1981 : December 6, academic and administrative building of Rajendra Agricultural University was inaugurated by Dr. Jagannath Mishra, Chief Minister, Government of Bihar.**
- 2010 : Rajendra Agricultural University was divided into another Agricultural University as Bihar Agricultural University Sabour, Bhagalpur, Bihar.**
- 2016 : October 7, Rajendra Agricultural University was upgraded to Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University.**

पूसा की भौगोलिक स्थिति

पूसा समुद्र तल से 52.0 मीटर की ऊँचाई पर बूढ़ी गण्डक नदी के दक्षिणी किनारे 25.98° उत्तरी अक्षांस एवं 85.67° पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। मार्च से अगस्त के दौरान गर्म और आर्द्र जलवायु होने के कारण इसकी अर्ध आर्द्र उप- उष्णकटिबंधीय जलवायु होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां उच्चतम तापक्रम 41.5° से 0 तक चला जाता है जबकि शीतकाल में तापक्रम 4.2° से 0 तक गिर जाता है। परन्तु, पूसा की जलवायु की विशेषता सुखद सर्दी, शुष्क गर्मी एवं पर्याप्त वर्षा है। यहां मध्य नवम्बर में सर्दी का आगमन हो जाता है जो फरवरी तक रहता है। मार्च से मई तक मौसम गर्म रहता है। वर्षा ऋतु की शुरुआत दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के आगमन के साथ ही जून में होती है जो सितम्बर माह तक रहती है। अक्टूबर मध्य तक वर्षा का मौसम समाप्त होने के साथ शीतकाल प्रारम्भ हो जाता है।



पूसा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर राजमार्गों से जुड़ा हुआ है एवं पूसा रोड (खुदीराम बोस पूसा) रेलवे स्टेशन के उत्तर में लगभग 12 कि.मी. दूरी पर स्थित है। बूढ़ी गंडक नदी पूसा को तीन दिशाओं से प्राकृतिक सीमा प्रदान करती हुई बहती है। बूढ़ी गंडक जिसका उदगम स्थान सिकरहना (पश्चिम चम्पारण) है, अपनी यात्रा खगड़िया तक पूरा कर पवित्र गंगा में मिल जाती है। अंग्रेजी वर्णमाला के यू अक्षर के समान बूढ़ी गंडक पूसा को तीन तरफ (उत्तर-पूरब-दक्षिण) से घेरे हुए है।

GEOGRAPHICAL LOCATION OF PUSA

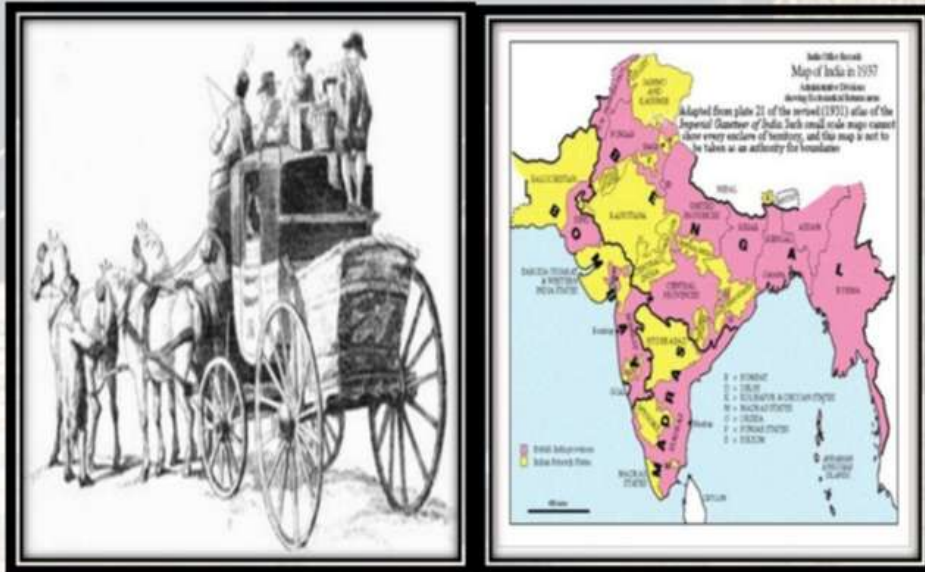
Pusa is situated at southern bank of Budhi Gandak river 25.98⁰N latitude and 85.67⁰E longitude at an altitude of 52.0 m MSL. It has a semi humid sub-tropical climate being hot and humid during March to August. The peak temperature in the summer goes up to 41.5⁰C and winter temperature drops to 4.2⁰C. The characteristics of Pusa's climate is pleasant winter, dry summer and adequate rainfall. The winter arrives in the mid-November and lasts till February. The summer stretches from March to May. With the arrival of the south-west monsoon, rain fall starts in June and it prolongs up to September. The winter begins with the end of the rainy season by mid of October.



Pusa is connected by highways from Darbhanga and Muzaffarpur towns and located about 12 km north from Pusa road (Khudiram Bose Pusa) Railway station. The river Budhi Gandak offers natural boundary from three sides. Budhi Gandak, whose place of origin is Sikarahana (West Champaran), completes its journey at Khagaria and joins the holy Ganges. Like the U of the English alphabet, the Budhi Gandak surrounds Pusa from three sides (north-east-south).

एक दिलचस्प अतीत

पूसा में एक स्टड फार्म जुलाई 5, 1784 को ईस्ट इंडिया कंपनी की मुहर के साथ एक सनद के माध्यम से स्थापित किया गया था। इस समय बिहार व बंगाल संयुक्त रूप से एक ही राज्य था जिसका प्रशासन कलकत्ता से सीधे संचालित होता था। कम्पनी की व्यापारिक गतिविधियों को गतिशीलता प्रदान करने एवं अक्षी नस्ल के घोड़ों के उत्थान के उद्देश्य से पूसा में एक घोड़साल की स्थापना की गई थी तथा समीपवर्ती प्रशस्त चारागाहों में घोड़ों को खिलाने के लिए अंग्रेजी खाद्य और घासों की पैदावार की योजना क्रियान्वित की गई थी। कैप्टन डब्ल्यू. फ्रेजर स्टड फार्म के पहले अधीक्षक थे। यहां पर कई प्रकार के घोड़ों के प्रजनन कार्य भी किए गए। इसके लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी ने यहाँ के तत्कालीक जमींदार को 1500 सिक्का मालगुजारी देना स्वीकार किया था। पूरे भारत में सरायसा घोड़े अक्षी गुणवत्ता के लिए जाने जाते थे एवं पूसा सरायसा परगना में पड़ता था।

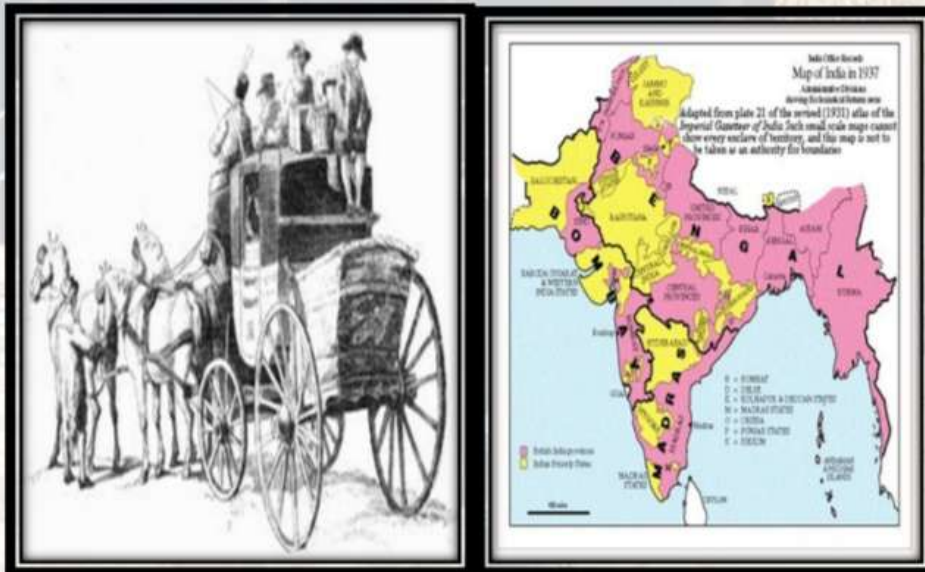


(ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी)

सन् 1796 में बंगाल सरकार (बिहार तब बंगाल का हिस्सा था) द्वारा पूसा गाँव को पूरी तरह से अधिग्रहित कर लिया गया था। सन् 1798 में नदी के दूसरी तरफ बख्तियारपुर गाँव जिसकी जनसंख्या 1,384 थी, की बंजर भूमि को भी सरकार को बिना किसी अतिरिक्त किराये के सौंप दिया गया।

AN INTERESTING PAST

A stud farm was established through a Sanad of July 5, 1784 at Pusa with the East India Company's seal. At that time Bihar and Bengal jointly were a single state and the administration was directly convened from Calcutta. To promote business prospects of the company and breed quality horses, the East India Company made its branch at Pusa and a plan was implemented to grow fodder grasses and English grains for horses in nearby developed pasture lands. The East India Company agreed to pay to the Zamindar a rental of 1,500 Sicca for the land occupied. Captain W. Fraser was the first Superintendent of the farm. The breeding of many types of horses were carried out at this farm. The Saraisa Horses were known for their quality all over India and Pusa falls in the Saraisa Pargana.



(Officers of East India Company)

In 1796, the village was totally acquired by Government of Bengal (Bihar was part of Bengal). In 1798, Bakhtiyarpur village having population of 1384 was taken over by government without any additional revenue.

पूसा के नाम का इतिहास

साक्ष्यों के आधार पर इसके पूर्व प्रमाणों और अभिलेखों में पूसा का शब्द-विन्यास भिन्न है। मुजफ्फरपुर के उप-समाहर्ता डब्लू आर० डेविड को पूसा घोड़साल के प्रथम सहायक व्यवस्थापक डब्लू० डब्लू० अपरले ने (पत्रांक 107 दिनांक 17 जनवरी, 1854) पूसा को जिन रोमन अक्षर युग्मों के साथ लिखा था व पूषा है। ऐसी स्थिति में प्रतीत होता है कि उन दिनों पूसा को पूषा लिखा जाता रहा होगा।

उक्त उदाहरण से यह प्रमाणित होता है कि 1904 में मिस्टर हेनरी फिप्स की दानशीलता से प्रभावित होकर ही जगह का नाम पूसा नहीं रखा गया था अपितु उससे पूर्व भी इसका नाम पूसा ही था। बाद में केवल वर्णक्षरों में परिवर्तन किया गया।

ऋग्वेद और अथर्ववेद से ज्ञान होता है कि राजा वैन के पुत्र राजा पृथी प्रभुद्ध कृषि विद्या के प्रथम आविष्कारक थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम कृषि विद्या के द्वारा विविध

[illegible]

यह बात मानने योग्य हो सकती है कि फिफ्स नाम के साथ सार्थक बनाने के लिए पूर्व रोमन वर्णाक्षरों में हेर-फेर कर पूसा बनाया गया है। एक दूसरी सम्भावना भी प्रतीत होती है कि अँग्रेजी में सम्बोधन की सुविधा के तहत पूषा शब्द को पूसा में परिवर्तित किया होगा।

अब पूसा के पर्व नाम पूषा की सार्थकता के सम्बन्ध में जिज्ञासित होने पर, यह भी विदित होता है कि पूषा मध्य युग में भी एक प्रशस्त स्थान था जहाँ से महीन और सुगन्धयुक्त चावल मुगल राजमहलों में खाने के लिए जाता था। अतः पूषा एक कृषि प्रधान ऐतिहासिक स्थल के रूप में उस समय भी प्रशस्त रहा।

जहाँ तक पूषा शब्द के शाब्दिक अर्थ का प्रश्न है - यह एक ऐसा सारगर्भिक शब्द है जिसका अर्थ उदीयमान सूर्य होता है। सूर्य कृषि के देवता है और पूषा शब्दोच्चारण ऋग्वेद की उस ऋचा से सम्बद्ध है जो मुख्यतया: राज्यरोहन में राज्यभिषेक के समय विधि-विधानों के साथ मन्त्रोच्चारण के रूप में लिया जाता रहा है यथा

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्य, अरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

कृषि शोध एवं उत्पादन की शुरुआत

गाँव की भूमि का उपयोग पूसा में घोड़ों के लिए घास उगाने में किया जाता था। इस गाँव के किरायेदारों को पूसा में आपूर्ति के लिए जई और अन्य घास उगाना पड़ता था। वे इसके लिए दादनी प्राप्त करते थे। जिन लोगों ने घासों को उगाने से इनकार किया, उन्हें निलहा साहिबों के किरायेदारों की तरह यातनाओं का सामना करना पड़ता था।

सन् 1874 में घोड़साल व्यवस्था की समाप्ति के बाद पूसा के अधिगृहित सम्पूर्ण क्षेत्र को सन् 1877 में मेसर्स बेग डनलप कम्पनी (कलकत्ता) ने तम्बाकू उत्पादन के लिए ठेका (लीज) पर प्राप्त किया। कलकत्ता के एक समाचार पत्रानुसार बंगाल ने पूसा में बड़े पैमाने पर तम्बाकू उत्पादन का काम शुरू करने की योजना बनायी और सम्पूर्ण सन्निहित क्षेत्र को तम्बाकू प्रक्षेत्र में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। समस्त पुराने अस्तबल और पशुशाला को मनीला पद्धति से तम्बाकू के सुखाने के लिए छव घर के रूप में प्रयुक्त करने की योजना बनी और तम्बाकू के पत्तों के निरोगीकरण के लिए अधीक्षक के रूप में डॉ. ई. ब्राउन को नियुक्त किया गया। यहाँ डनलप कम्पनी द्वारा तम्बाकू उत्पादन और शोध कार्य की शुरुआत हुई। यहाँ मुख्यतः वर्जीनिया तम्बाकू पर शोध एवं उत्पादन कार्य होता था, जिसका निर्यात सिगरेट बनाने के लिए किया जाता था एवं इसकी मांग अर्न्तराष्ट्रीय पैमाने पर थी। सन् 1897 में बंगाल सरकार ने मेसर्स बैग डनलप कम्पनी के ठेके को निरस्त कर दिया और यह कारखाना बंद हो गया।

लॉर्ड मेयो, वाइसराय और गवर्नर जनरल, कृषि महानिदेशालय की स्थापना के अपने प्रस्ताव के माध्यम से बार-बार कोशिश कर रहे थे कि कृषि की देखभाल और उत्पादकता पर ध्यान दिया जाए, खेती की नई तकनीक तैयार की जाए बीज और पशुधन की गुणवत्ता में सुधार किया जाए, और कृषि शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की जाय। इस कार्य के लिये भारत सरकार ने एक ब्रिटिश विशेषज्ञ डॉ. जे. ए. वोल्कर को आमंत्रित किया, जिन्होंने भारतीय कृषि के विकास पर रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, विभिन्न क्षेत्रों में वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून (यूपी.) में मुख्यालय के साथ तीन विशेषज्ञों कृषि रसायनज्ञ डॉ. जे. डब्ल्यू. लीफर, क्रिप्टोगैमिक बॉटनिस्ट, डॉ. आर. ए. बटलर और एंटेमोलॉजिस्ट डॉ. एच. मैक्सवेल लेफ्राय, अनुसंधान संस्थान देहरादून (यूपी) में मुख्यालय के साथ की पहली बार 1885 से 1895 के दौरान नियुक्ति की गई।

तत्पश्चात विभिन्न क्षेत्रों के तीन विशेषज्ञों डा. जे. डब्ल्यू. लीडर, (कृषि रसायनज्ञ), डॉ. ई. जे. बटलर (क्रिप्टोगैमिक वनस्पतिशास्त्री) और डॉ. एच. मैक्सवेल लेफ्राय (कीट वैज्ञानिक) वन अनुसंधान संस्थान परिसर, देहरादून, यूपी. में मुख्यालय के साथ, पहली बार 1885 से 1895 के दौरान नियुक्त किया गया।

INITIATION OF AGRICULTURAL RESEARCH AND PRODUCTION

The village was used for production of grass to the horses at Pusa. The villagers were required to grow oats and other English grasses to supply at Pusa. They used to get *Dadni* for this. Those who refused to grow these grasses were subjected to torture like the tenants of Nilha Sahibs.

After the abolition of the Ghodasal system in 1874 the entire area of Pusa was leased out to M/s Beg Dunlop Company (Kolkatta) for production of tobacco in 1877. According to a Calcutta newspaper, Bengal planned to start mass tobacco production in Pusa and decided to convert the entire contiguous area into a tobacco sector. All the old stables and stockyards were planned to be used as a shade house for drying tobacco by Manila method and Dr. E. Brown was appointed as the superintendent for the production of disease free tobacco leaves. Now the production and research on tobacco was started by the Dunlop Company. It was primarily involved in the researches and production of Virginia tobacco, which was exported to make cigarettes and its demand was on international scale. However, in 1897, the Bengal government canceled the contract of M/s Beg Dunlop Company and the factory was closed.

Lord Mayo, the viceroy and Governor General, had been repeatedly trying to get through his proposal for establishment of a directorate general of Agriculture that would take care of Agriculture and its productivity, formulate newer techniques of cultivation, improve the quality of seeds and livestock and also arrange for imparting agricultural education. The government of India had invited a British expert. Dr. J.A Voelcker who had submitted a report on the development of Indian Agriculture. As a follow-up action, three experts in different fields were appointed for the first time during 1885 to 1895 namely, Agricultural Chemist, Dr. J.W. Leather; Cryptogamic Botanist, Dr. E.J. Butler and Entomologist Dr. H. Maxwell Lefroy with headquarters at Dehradun (UP) in the Forest Research Institute complex.

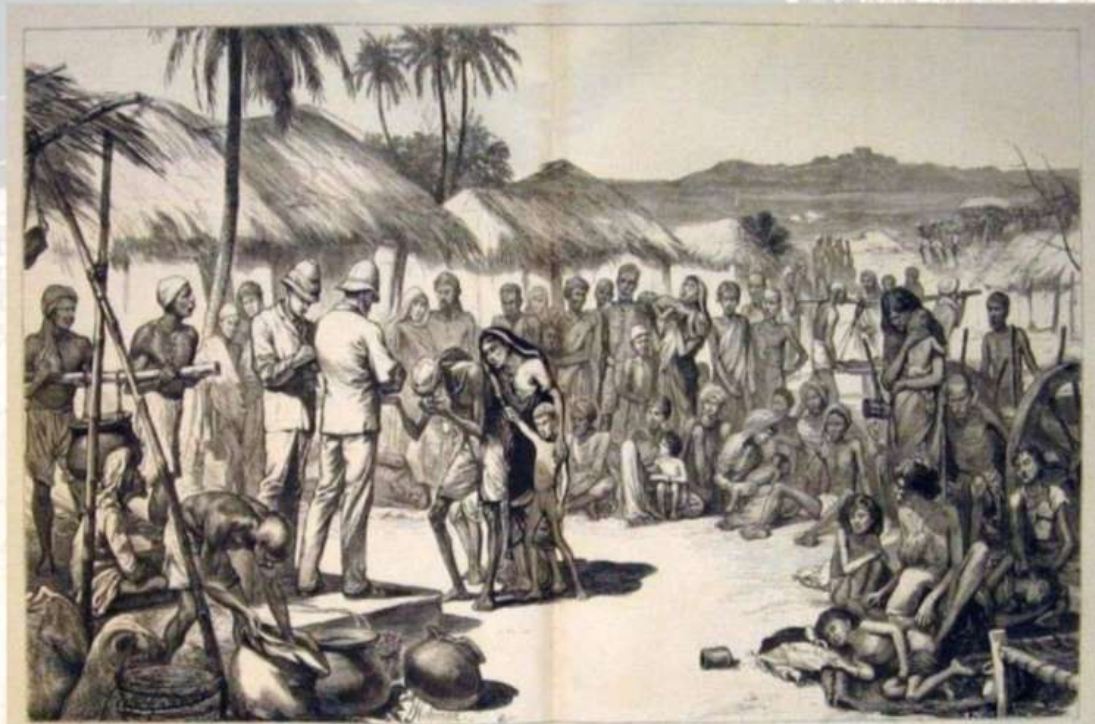
Subsequently, three experts of different fields were appointed for the first time during 1885 to 1895 namely, Dr. J. W. Leather, (Agricultural Chemist), Dr. E. J. Butler (Cryptogamic Botanist) and Dr. H. Maxwell Lefroy (Entomologist) with headquarters at Dehradun (U.P.) in the Forest Research Institute complex.

1899-1900 अकाल : कृषि अनुसंधान की आवश्यकता

1899-1900 का अकाल भारतीय जनसंख्या के लिए अत्यन्त घातक था। इस स्थिति की भविष्य में पुनरावृत्ति न हो, इसके लिए उच्चतम स्तर पर विचार विमर्श शुरू हुआ और भारतीय कृषि के उत्थान के लिए एक शोध संस्थान बनाने का निर्णय लिया गया। लार्ड कर्जन की राजनीतिक सोच एवं श्री फिप्स के आर्थिक सहयोग से कृषि अनुसंधान संस्थान की पूसा में स्थापना हुई।



भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में भयानक अकाल

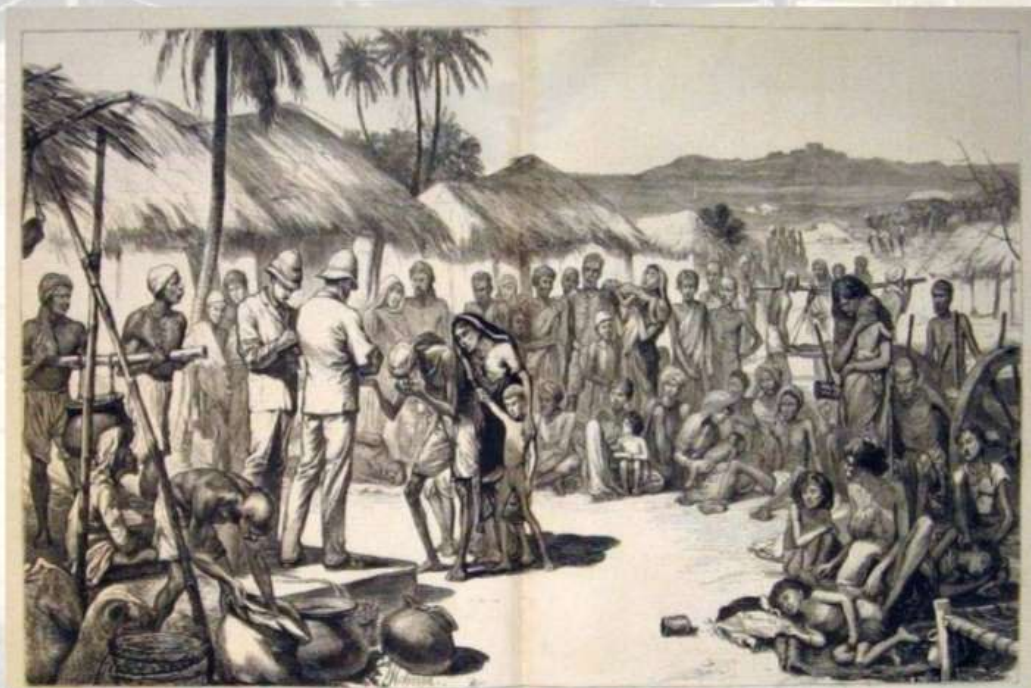


1899-1900 FAMINE: NEED OF AGRICULTURAL RESEARCH

The famine of 1899–1900 was a jolt to Indian population. To avoid repeat of such incidence, the discussion started at highest level of government and it was decided to establish a research institute for the development of Indian Agriculture. Political will of Lord Curzon and financial help from Mr. Phipps led to establishment of Agricultural Research Institute at Pusa.



Devastating Famine of India, Pakistan and Bangladesh



पूसा में एग्रीकल्चरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट का शिलान्यास

पूसा में एग्रीकल्चरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट और कॉलेज की स्थापना 1905 में हुई। उक्त संस्था का शिलान्यास तत्कालीन गवर्नर जनरल और वायसराय लॉर्ड कर्जन के कर-कलमों द्वारा सम्पादित हुआ। मि० हेनरी फिप्स अमेरिका के शिकागो शहर का रहने वाला एक करोड़पति व्यक्ति था और विश्व मानवता प्रेमी था। उन्होंने राष्ट्रीय संस्था के सेवा भावना से प्रभावित हो कर £ 30,000 (पाउण्ड) का दान दिया। इधर वायसराय लॉर्ड कर्जन की पत्नी मैरी विक्टोरिया एक अमेरिकन महिला थी। अपने वैवाहिक सम्बन्ध को लेकर वायसराय लॉर्ड कर्जन का सम्पर्क हेनरी फिप्स से हुआ था। कर्जन और फिप्स मित्र बन गये थे। वैसे भी वायसराय कर्जन भू-स्वामी का पुत्र था जिसे खेती के प्रति पैतृक अभिरुचि विरासत में प्राप्त हुई थी।

एक अप्रैल 1905 को भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन द्वारा एग्रीकल्चरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट की आधारशिला रखी गई। यह इमारत फिप्स प्रयोगशाला या “नौलखा” बिल्डिंग के नाम से लोकप्रिय हुई। इसकी विशालता, सुन्दरता और भव्यता लोगों को बरबस आकर्षित करने वाली थी। साफ और बादल रहित आकाश के समय इसके गुम्बद से हिमालय भी देखा जा सकता था। फिप्स लेबोरेटरी (प्रयोगशाला) की यह विशाल इमारत विशेष ढंग से बनाई गयी ईंट और पत्थरों से बनी थी। लेबोरेटरी की कुछ ईंट अभी भी कहीं-कहीं देखने को मिलती है, जिसमें बनर्जी एण्ड कम्पनी 1906 लिखा हुआ खुदा है। पूरी ईमारत दो मंजिला थी और बीच में प्रधान गुम्बद के अतिरिक्त पाँच छोटे-छोटे गुम्बद थे। भू-तल के स्तम्भ विशेष ढंग से बनाये ईंटों के थे लेकिन उपरी मंजिल के स्तम्भ गोलाकार पत्थरों को संयुक्त रूप से सजाकर बनाया गया था।



मि० हेनरी फिप्स अमेरिका द्वारा £ 30,000 (पाउण्ड) का दान

गवर्नर जनरल और वायसराय लॉर्ड कर्जन के कर-कलमों द्वारा



ईंट निर्माण : बनर्जी एण्ड कम्पनी, 1906

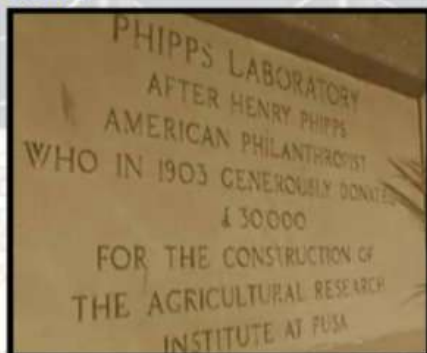


पूसा में भव्य ईमारत : एग्रीकल्चरल रिसर्च इन्स्टीट्यूट का 1907 में

FOUNDATION STONE OF AGRICULTURAL RESEARCH INSTITUTE AT PUSA

The Agricultural Research Institute and College were established at Pusa in 1905. The foundation stone of the said organization was laid by the then Governor General and Viceroy Lord Curzon. Mr. Henry Phipps was a millionaire native of Chicago, America and was a dear to world humanity. Endowed with the spirit of service of national institution, he donated £ 30,000 (pounds). Here Viceroy Lord Curzon's wife Mary Victoria was an American lady. Viceroy Lord Curzon came in contact with Henry Phipps due to his marital relationship. Curzon and Phipps became friends. Although the Viceroy Curzon was the son of a land lord, inherited with paternal interest towards farming.

On April 1, 1905, the foundation stone of the Agricultural Research Institute was laid by the Viceroy and Governor General of India Lord Curzon. The building became popular as Phipps Laboratory or "Naulakha" building. Its vastity, beauty and grandeur were attractive to the people. The Himalayas could also be seen from its dome at the time of a clear and cloud-free sky. This iconic building of Phipps Laboratory was built-up of specially made bricks and stones. Some bricks of the laboratory are still seen in some places, in which the inscription written as Banerjee and Company 1906 is inscribed. The entire building was two storeyed and had five small domes in addition to the main dome in the middle. The pillars of the ground floor were built of special bricks; however, pillars of the upper floor were made jointly by decorating circular stones.



Donation of £30,000 (Pounds) by Mr. Henry Phipps, America



Foundation stone laid by Governor General and Viceroy Lord Curzon



Brick construction : Banerjee and Company, 1906



Grandeur building at Pusa: Construction of Agricultural Research Institute, 1907

APPOINTMENT OF AGRICULTURAL SCIENTIST AT PUSA

In 1903, Dr. H.M. Lefroy was appointed Entomologist by the government. Then in 1905 he starred in the creation of the Imperial Agriculture Research Institute at Pusa. He was appointed as the first Imperial Entomologist. Dr. J. W. Leather was appointed as Agricultural Chemist of Imperial Agricultural Research Institute, Pusa, Bihar. He got an opportunity to work on various types of agricultural products and chemistry science related work. Sir E. J. Butler was an Irish Mycologist and Plant Pathologist. He became an Imperial Mycologist in India and later was the first Director of Imperial Bureau of Mycology in England. During his twenty years in India, he began a large-scale survey on the pathology of fungi and plants, and wrote a book on Diseases in Plants : An Introduction to Field and Plantation Crops. This was particularly for India and published in the year 1918. He is known as the father of Mycology and Plant Pathology in India.

Mr. F. J. F. Shaw held the post of Director of the Institute during 1928-30 and 1932-35. He was a well-known Economical Botanist. The fame he earned as a great breeder of advanced wheat species in the Pusa series will be remembered for the years. Mr. F. J. F. Shaw, born on December 16, 1885, was first employed as Mycologist and then the Imperial Economic Botanist at the Indian Agricultural Research Institute, Pusa. Mr. Shaw served from 1929 to 1934 as Joint Director and Director. He served as the last director of the Institute from British origin and was known as the wheat breeder for the development of Pusa wheat varieties.

कृषि अनुसंधान संस्थान (ए० आर० आई०), पूसा की उप-इकाइयाँ

कृषि अनुसंधान संस्थान (ए० आर० आई०) के पाँच विभाग, कृषि एवं पशु प्रजनन, रसायन विज्ञान, आर्थिक वनस्पति विज्ञान, कीट विज्ञान और सूक्ष्म विज्ञान की शुरुआत की गई। सूक्ष्म-जीव विज्ञान विभाग बाद में जोड़ा गया। सन् 1907 में संस्थान की पाँच उप-इकाइयों की स्थापना हुई जो कि गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर, केन्द्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान, राजामुंदरी, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला, भारतीय लाख अनुसंधान संस्थान, रांची एवं केन्द्रीय कपास समिति और रेशम संस्थान, भागलपुर है।



The Agricultural Research Institute Originally established at Pusa, Bihar, popularly known as (Naulakha)



Scientists at work in a laboratory at the Agricultural Research Institute at Pusa, Bihar

गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर



केन्द्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान, राजामुंदरी



केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान,



भारतीय लाख अनुसंधान संस्थान,



केन्द्रीय कपास समिति और रेशम संस्थान,

ए० आर० आई० पूसा से कृषि शिक्षा कार्य का प्रारंभ

ए० आर० आई० पूसा के केन्द्रीय नेतृत्व से कृषि शिक्षा की नींव 19 वीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के शुरुआत में पूसा के अतिरिक्त कानपुर (1893), लायलपूर, लाहौर (1905), नागपुर (1906), पूना और कोयंबटूर (1907) तथा सबौर (1908) में छह कृषि केन्द्रों एवं कालेजों की स्थापना की गई।



कानपुर (1893), उत्तर प्रदेश



लायलपूर (1905), लाहौर, पंजाब



नागपुर (1906), महाराष्ट्र



पूना (1907), महाराष्ट्र



कोयंबटूर (1907), तमिलनाडू



सबौर (1908), बिहार

AGRICULTURAL EDUCATION STARTED FROM A.R.I., PUSA

During the end of 19th Century and beginning of 20th Century, the foundation for Agricultural Education was laid in India under the central leadership of A.R.I., Pusa with the establishment of six Agricultural stations and Colleges at Lyallpur, Lahore (1905), Kanpur (1893), Nagpur (1906), Poona and Coimbatore (1907) and Sabour (1908).



Kanpur (1893), Uttar Pradesh



Lyallpur (1905), Lahore, Punjab



Nagpur (1906), Maharashtra



Poona (1907), Maharashtra



Coimbatore (1907), Tamil Nadu



Sabour (1908), Bihar

विनाशकारी भूकम्प 1934

यह कृषि अनुसंधान संस्थान प्रयोगशालाओं, एक संग्रहालय, हर्बेरिया और एक अप-टू-डेट वैज्ञानिक पुस्तकालय से पूरी तरह सुसज्जित था। संस्थान की गतिविधियों को मुख्य रूप से अनुसंधान प्रयोग और शिक्षा की ओर निर्देशित किया गया था। अनुसंधान के क्षेत्र में संस्थान सामान्य और अखिल भारतीय महत्व की समस्याओं का समाधान करता था।

बिहार के इस गौरव को उस समय गहरा झटका लगा जब 15 जनवरी, 1934 में विनाशकारी भूकंप ने शानदार प्रशासनिक इमारतों और प्रयोगशालाओं को नष्ट कर दिया। इससे पूरे उत्तर बिहार को तबाही का सामना करना पड़ा था। भूकम्प द्वारा इमारतों की क्षति की मरम्मत या पुनः निर्माण के बजाय, भारत की तत्कालीन सरकार ने वर्ष 1935 में संस्थान को नई दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया।



फिफ्स लेबोरेटरी के आलीशान मकान में भूकंप द्वारा गहरे दरार

जनवरी 15, 1934-बिहार फिफ्स लेबोरेटरी में विनाशकारी भूकंप 2.10 बजे दिन में (तीव्रता रिक्टर स्केल पर 8 मापी गई) फिफ्स लेबोरेटरी का आलीशान मकान दो गहरे दरारों से क्षतिग्रस्त हो गया जिससे इस कीमती भवन का पुस्तकालय कक्ष एवं प्रयोगशाला का मुख्य भाग क्षतिग्रस्त हो गया।



भूकंप द्वारा क्षतिग्रस्त पुस्तकालय



भूकंप के बाद महात्मा गांधी की बिहार यात्रा
(मार्च, 1934)

DEVASTATING EARTHQUAKE 1934

This Agricultural Research Institute was fully equipped with laboratories, a museum, herbaria and an up-to-date scientific library. The activities of the Institute were mainly directed towards research experiments and education. On research front the Institute dealt with the problems of general and all India importance.

This glory of Bihar received a severe shock when the magnificent administrative buildings and laboratories were destroyed by the devastating Earthquake on January 15, 1934, which desolated the whole of North Bihar. Instead of repairing or re-building of the damages caused by earthquake, Government of India decided to shift the Institute to New Delhi in 1935.



Deep cracks of Phipps Laboratory's plush house by earthquake

January 15, 1934 - The devastating earthquake at Phipps Laboratory, Bihar, at 2.10 pm (measured 8 on the intensity of reactor scale) Phipps Laboratory's plush house was damaged by two deep cracks that damaged the library room and the main part of the laboratory.

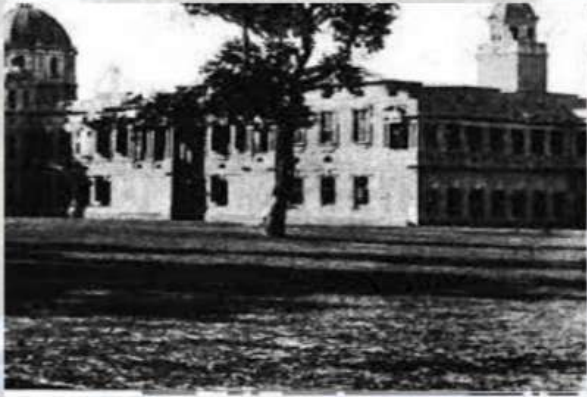


Damage of Library by earthquake



Visit of Mahatma Gandhi after the earthquake in Bihar (March, 1934)

कृषि अनुसंधान संस्थान का पूसा से दिल्ली स्थानांतरण



भूकम्प से क्षतिग्रस्त कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा का मुख्य भवन



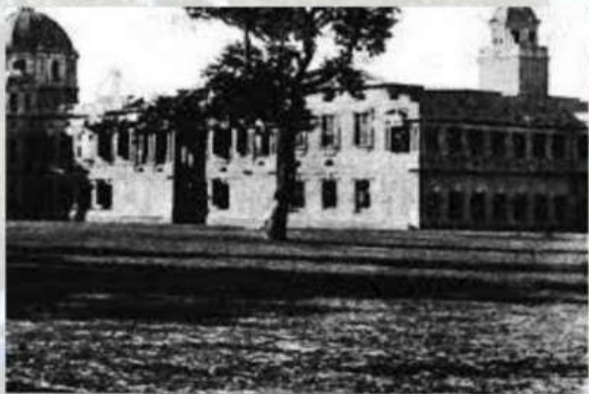
भूकम्प के कारण परिसर में दरारें



संस्थान का पूसा से दिल्ली स्थानांतरण कार्य प्रगति पर

भारत सरकार के इस निर्णय के (संस्थान का पूसा से नई दिल्ली स्थानांतरण) खिलाफ बिहार के लोगों की ओर से एक विशाल आंदोलन और विरोध प्रदर्शन हुआ, लेकिन यह असफल रहा। वर्ष 1936 में संस्थान को दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया। इस स्थानांतरण में सरकार के लाखों रुपये खर्च हुए और दिल्ली में संस्थान के नये स्थल को न्यू पूसा के नाम से नामित कर दिया गया। इसके साथ ही केन्द्रीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, मुशहरी (मुजफ्फरपुर) को पूसा में स्थानांतरित कर मुख्यालय बना दिया गया। संस्थान के स्थानांतरण से ही सरकार संतुष्ट नहीं हुई बल्कि इस विशाल इमारत को ध्वस्त करके इमारत के निशान मिटा दिए गए। इस कार्य की लागत पंद्रह हजार रुपये से अधिक थी। इस समय केवल पुराने ऐतिहासिक संस्थान की यादें बची हैं।

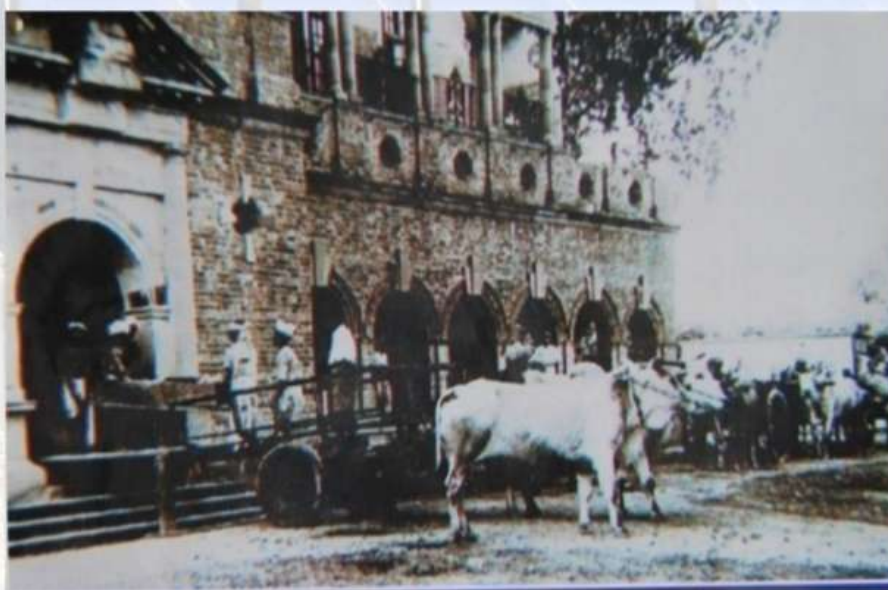
TRANSFER OF THE AGRICULTURAL RESEARCH INSTITUTE FROM PUSA TO DELHI



Agricultural Research Institute, Pusa main building, damaged by earthquake



Cracks in the premises after earthquake



Transfer work of the institute under progress from Pusa to Delhi

There was a massive agitation and protests from the people of Bihar against the decision (to transfer the institute from Pusa to Delhi) of the Indian Government, but the efforts tried in vain. The Institute was shifted to Delhi in 1936. This shifting costed the Government lacs of rupees and new site of the Institute at Delhi was nominated as New Pusa. At the same time Central Sugarcane Institute, Mushahari (Muzaffarpur) was shifted to Pusa as headquarter. The Government did not remain satisfied with the shifting of the Institute, even the traces of the building were wiped out by dismantling this massive building. The cost of dismantling amounted to over fifteen thousand of rupees. Presently only the reminiscences of the old historic Institution are left.

वैज्ञानिक रिपोर्ट : इंपीरियल कृषि अनुसंधान संस्थान का स्थानांतरण

वैज्ञानिक रिपोर्ट इंपीरियल कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली निदेशक की रिपोर्ट 1935-1936 (राय बहादुर विस्वानाथ, एफ.एल.सी.)

नई दिल्ली में संस्थान का स्थानांतरण

संस्थान के लिए वर्ष की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण घटना इसका पूसा से नई दिल्ली में स्थानांतरण है। पिछले वर्ष की रिपोर्ट में, यह उल्लेख किया गया था कि, जनवरी 1934 के भूकंप से फ़िल्म प्रयोगशाला के क्षतिग्रस्त होने के परिणामस्वरूप, पूसा से नई दिल्ली में संस्थान को स्थानांतरित करने का निर्णय आखिरकार लिया गया था, और यह आवश्यक तैयारी थी प्रगति पर थे। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, ये तैयारियां पूरी हो गई थीं और रिपोर्ट के तहत आने वाले वर्ष से एक महीने पहले वास्तविक चाल की शुरुआत हुई। इस रिपोर्ट को लिखने के समय, यह चाल पूरी हो गई है। पूसा के इंपीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट जैसे बड़े संस्थानों के धोक हस्तांतरण के उदाहरण भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के अन्य जगहों के वार्षिक अनुसंधान संस्थानों में बहुत कम हैं। इस कदम का एक संक्षिप्त विवरण, व्याज की हो सकती है।

स्थानांतरण

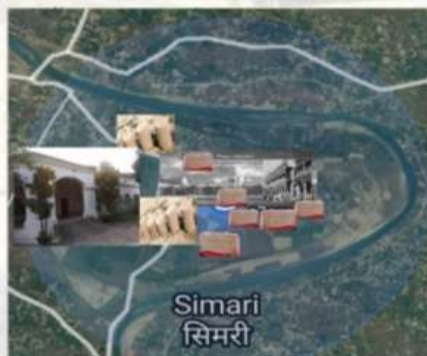
स्थानांतरण को प्रभावित करने में, संस्थान के अधिकारियों को अजीब और अपरिहार्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जो शारीरिक और वित्तीय दोनों थे। संस्थान में 1,300 कर्मचारियों और उनके परिवारों की आबादी है। चूंकि चीजों को पैक करना और भेजना आवश्यक था, जब तक कि अंतिम वस्तु पूसा को छोड़ कर दिल्ली में प्राप्त न हो जाए और संस्थान के विभिन्न वर्गों के पैकेज समाप्त हो जाए क्योंकि उन्हें कर्मचारी के पूसा में छोटी पर बने रहने और दिल्ली जाने के लिए कदम रखना था। कम से कम संभव देरी। इसने अस्पताल के सैनिकी और स्वास्थ्य सेवा के मुख्य किशोर और पूसा में पावर हाउस के अंतिम क्षण तक और अग्रिम पार्टी के लिए दिल्ली में इस सभी को केंद्रीय और अनुभागीय कार्यालयों में कार्यालय के काम के रखरखाव की आवश्यकता थी, जिसे हम एक दिन के लिए भी अस्वीकार नहीं कर सकते थे, हालांकि यह महान विकलांगता के तहत किया जा रहा था कि निदेशक कार्यालय के कर्मचारियों को दिल्ली और पूसा के बीच वितरित किया गया था। वित्तीय पक्ष में इस कदम की लागत को संस्थान के आम बजट में प्रभावित बचत के लिए प्रतिबंधित किया जाना था और इस अंत में कड़े प्रतिबंधों को व्यय और उन पदों पर रखा जाना था जो अधिक या कम अवधि के लिए खाली हो गए थे। दायर किया। यह स्वाभाविक रूप से संस्थान की प्रभावी ताकत पर इसके नतीजे थे। पूसा में सभी उपलब्ध क्षेत्र के वित्तीय दबाव और तनाव को कम करने के लिए गन्ने की व्यावसायिक खेती के तहत रखा गया था। यह अनुमान लगाया गया था कि रु। 50,000 से रु। फसल की बिक्री से 60,000 का एहसास होगा, लेकिन जैसा कि दुर्भाग्य होगा, मौसम की स्थिति शुरू होने से शुरुआत में भारी बारिश हुई और बाद के कारण फसल एक महीने से अधिक समय तक जल जमाव की स्थिति में रही। इसके बाद कीटों की क्षति हुई, और इसका परिणाम यह हुआ कि वास्तव में गन्ने की फसल की बिक्री से प्राप्त होने वाली प्राप्ति में रु। 1,37,600। यह बताने में सक्षम है कि सभी शारीरिक और वित्तीय कठिनाइयों को दूर किया गया है और इस कदम को बिना किसी शर्मिंदगी, वित्तीय या अन्यथा के सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। यह परिणाम मुख्य रूप से हंसमुख संचालन और सेवा के हर ग्रेड में स्टाफ के प्रत्येक सदस्य द्वारा कड़ी मेहनत करने के लिए उपयुक्त है। भारी कार्यालय फर्नीचर सहित दिल्ली में उपयोगी माने जाने वाले उपकरणों की प्रत्येक वस्तु को दिल्ली लाया गया है और कुछ भी नहीं है जो अब या निकट भविष्य में उपयोगी होगा पूसा में छोड़ दिया गया है।

ईस अनुसंधान संस्थान मुशहरी (मुजफ्फरपुर) से स्थानान्तरित होकर पूसा प्रक्षेत्र में स्थापित, 7 अक्टूबर 1936



पूसा में सभी उपलब्ध क्षेत्र के वित्तीय दबाव और तनाव को कम करने के लिए गन्ने की व्यावसायिक खेती के तहत रखा गया को सफलतापूर्वक सभी शारीरिक और वित्तीय कठिनाइयों को दूर किया गया।

फिल्म लेवोरेटरी, संस्थान की मुख्य ईमारत को क्षतिग्रस्त कर ईट, पत्थरों को निलाम किया गया जिसे तीन क्षेत्रीय लोगों द्वारा 1939 में अपना घर बनाया गया



माहमा में बने घर का चित्र
महमा में बने घर का चित्र
House made in 1939 by auctioned brick and stone presently situated at Mahmada, Pusa

SCIENTIFIC REPORTS FOR TRANSFER OF THE IMPERIAL AGRICULTURAL RESEARCH INSTITUTE

SCIENTIFIC REPORTS OF THE Imperial Agricultural Research Institute, New Delhi REPORT OF THE DIRECTOR 1935-36

(Rau Bahadur B. Viswanath, F.L.C.)

1. THE TRANSFER OF THE INSTITUTE TO NEW DELHI

The biggest and the most important event of the year for the Institute is its transfer from Pusa to New Delhi. In the report for the previous year, it was mentioned that, as a consequence of the Phipps Laboratory having been damaged by the earthquake of January 1934, the decision to move the Institute from Pusa to New Delhi was finally taken, and that the necessary preparations were in progress. During the year under review, these preparations were completed and the actual move commenced a month before the year under report came to a close. At the time of writing this report, the move is complete. Instances of wholesale transfer of big Institutes, like the Imperial Agricultural Research Institute at Pusa, are very rare in the annals of research institutions not only in India but elsewhere in the world. A brief description of the move may, therefore, be of interest.

2. THE MOVE

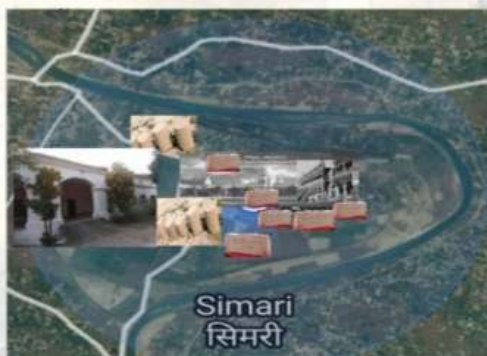
In effecting the transfer, the authorities of the Institute had to face peculiar and unavoidable difficulties which were both physical and financial. The Institute has a population of 1,300 composed of the staff and their families. As it was necessary to pack and dispatch things till the last item has left Pusa and received at the Delhi end. The packages of the different sections of the Institute as they arrived the staff had to remain on duty at Pusa and move to Delhi with the least possible delay. This necessitated the main teenage of sanitary and health service of the hospital and of the power house at Pusa till the last moment and the running of a parallel set of services at Delhi for the advance party. All this necessitated the maintenance of office work in the Central and Sectional Offices, which we could not afford to dislocate even for a day although it was being carried on under the great disability that the staff of the Director's Office had been distributed between Delhi and Pusa. On the financial side the cost of the move had to be restricted to the savings effected in the normal budget of the Institute and to this end stringent restrictions had to be placed on expenditure and posts that had fallen vacant for longer or shorter periods could not be filled. This naturally had its repercussions on the effective strength of the Institute. To circumvent the financial stress and strain occasioned by the move all available area at Pusa was placed under commercial cultivation of sugarcane. It was anticipated that a sum of Rs. 50,000 to Rs. 60,000 would be realized by the sale of the crop, but as ill luck would have it, attaching weather conditions were propitious in the beginning, the crop suffered from heavy rains and water logging for over a month by floods. This was followed by insect damage, and the result was that the receipts actually realized by the sale of the sugarcane crop amounted to Rs. 37,600. It is pleasing to be able to state that all the physical and financial difficulties have been overcome and the move has been successfully completed without any embarrassment, financial or otherwise. This result is after batable mainly to the cheerful co-operation and hard work by every member of the staff in every grade of service. Every item of equipment that was considered useful at Delhi, including heavy office furniture, has been brought to Delhi and nothing which would be useful now or in the near future has been left at Pusa.

1



Establishment of the Sugarcane Research Institute at Pusa after transfer from Mushahari (Muzaffarpur, 7th Nov. 1936)

To circumvent the financial stress and strain occasioned by the move all available area at Pusa was placed under commercial cultivation of sugarcane. It was successfully completed without any embarrassment, financial or



Simari
सिमरी



House made in 1939 by auctioned brick and stone presently situated at Mahmada, Pusa

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना 1970
Rajendra Agricultural University, Established in 1970



Sri S.K. Chakrabarty
3.12.1970 to 31.03.1973

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय बिहार
के
मुख्य प्रांगण के
प्रशासनिक एवं शैक्षणिक संकुल का
उद्घाटन
माननीय डॉ. जगन्नाथ मिश्रा, मुख्यमंत्री बिहार
के कर कमलों द्वारा
सम्बत् २०३८ दिनांक ६ दिसम्बर १९८१
को सम्पन्न हुआ

पूसा में भारतीय कृषि शोध एवं शिक्षा की नींव के
प्रतिष्ठापक : लार्ड बर्रोन कर्जन

**FOUNDER OF THE AGRICULTURAL RESEARCH AND
EDUCATION IN PUSA : LORD BARON CURZON**



लार्ड बर्रोन कर्जन

(11 जनवरी 1859-20 मार्च 1925)

Lord Baron Curzon

(11 January 1859 – 20 March 1925)

THIS STONE WAS LAID BY
HIS EXCELLENCY
BARON CURZON OF KEDLESTON
G.M.S.I. G.M.I.E.
VICEROY AND GOV^R-GEN^L OF INDIA
ON THE 1ST APRIL 1905

पूसा में भारतीय कृषि शोध एवं शिक्षा की नींव के सूत्रधारक
**INITIATOR OF AGRICULTURAL RESEARCH AND
EDUCATION AT PUSA**



हेनरी फिप्स

सितम्बर 27, 1839 से सितम्बर 22, 1930

Henry Phipps

September 27, 1939 to September 22, 1930



जॉन अगस्तस वॉल्कर

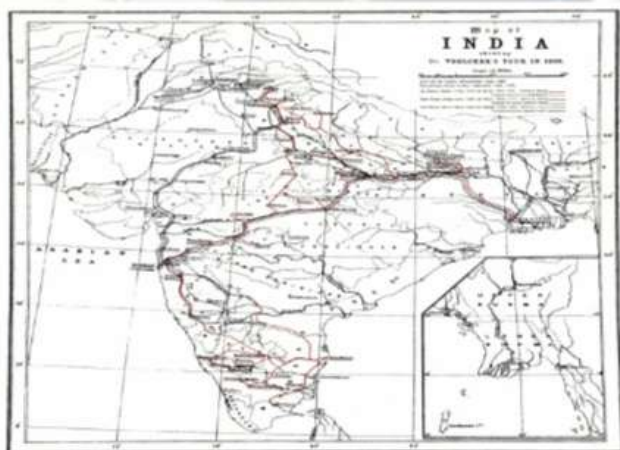
(24 जून 1854 - 6 नवम्बर 1937)

John Augustus Voelcker

(24 June 1854 - 6 November 1937)

मि० जॉन अगस्तस वॉल्कर एक अंग्रेजी कृषि रसायनज्ञ थे। सन् 1889 में, वॉल्कर से भारत के सचिव द्वारा भारतीय कृषि में सुधार की जाँच करने का अनुरोध किया गया था। वे पूरे एक वर्ष भारत में घूमने के बाद सिफारिशों की एक 450 पृष्ठ की रिपोर्ट तैयार की।

Mr. John Augustus Voelcker was an English Agricultural Chemist. In 1889, the Secretary of the State of India requested Mr. Voelcker to examine about the reforms of Indian agriculture. He travelled all around the India for whole year and prepared a 450-page report of recommendations.



वॉल्कर की भारत यात्रा

Voelcker's journey around India

तीन विशेषज्ञों की पूसा में नियुक्ति



जॉन वाल्टर लीडर

जॉन वाल्टर लीडर (सन् 1860–1934) एक कृषि रसायनज्ञ थे जिन्होंने भारत के पूसा, बिहार में इंपीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट में पहले इंपीरियल एग्रीकल्चरल केमिस्ट के रूप में काम किया था। वे सन् 1892 में नियुक्त हुए एवं कृषि उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर कार्य किया।

John Walter Leather (1860-1934) was an Agricultural Chemist, who worked in India as the first Imperial Agricultural Chemist at the Imperial Agricultural Research Institute, Pusa, Bihar. He was appointed in 1892 and worked on different aspects of agricultural production.



सर एडविन जॉन बटलर

सर एडविन जॉन बटलर, एफ.आर.एस. (13 अगस्त 1874–4 अप्रैल, 1943) एक आयरिश माइकोलॉजिस्ट एवं प्लांट पैथोलॉजिस्ट थे। वे भारत में इंपीरियल माइकोलॉजिस्ट बने एवं बाद में इंग्लैंड में इंपीरियल ब्यूरो ऑफ माइकोलॉजी के पहले निदेशक हुए। उन्होंने 1939 में नाइट की उपाधि प्राप्त की थी। भारत में अपने बीस वर्षों के दौरान, उन्होंने कवक और पौधों की पैथोलॉजी पर बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण शुरू किया और ऐतिहासिक किताब "फंजाई एण्ड डिजीजेज इन प्लान्ट्स : एन इंट्रोडक्सन टू द डिजीजेज ऑफ फील्ड एण्ड प्लांटेशन क्रॉप्स", विशेष रूप से भारत में प्रकाशित किया (1918)। उन्हें भारत में माइकोलॉजी एंड प्लांट पैथोलॉजी का जनक भी कहा जाता है।

Sir Edwin John Butler, FRS (13 August 1874 – 4 April 1943) was an Irish Mycologist and Plant Pathologist. He became the Imperial Mycologist in India and later the first Director of the Imperial Bureau of Mycology in England. He was knighted in 1939. During his twenty years stay in India, he began large scale surveys on fungi and published the landmark book "Fungi and Diseases in Plants: An Introduction to the Diseases of Field and Plantation Crops", especially in India (1918). He has also been known as Father of Mycology and Plant Pathology in India.



हेराल्ड मैक्सवेल-लेफ्राय

मि० हेराल्ड मैक्सवेल-लेफ्राय (20 जनवरी 1877 दृ 14 अक्टूबर 1925) पहले कीट विज्ञानी थे, जो 1905 में इंपीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट के निर्माण में शामिल हुए और उन्हें पहला इंपीरियल एंटोमोलॉजिस्ट नियुक्त किया गया था।

Mr. Herold Maxwell-Lefroy (20 January 1877 – 14 October 1925) was first Entomologist who was involved in the creation of the Imperial Agricultural Research Institute at Pusa in 1905 and he was appointed as first Imperial Entomologist

आधुनिक जैविक कृषि के जनक : सर अल्बर्ट हॉवर्ड



सर अल्बर्ट हॉवर्ड

(8 दिसम्बर, 1873 से 20 अक्टूबर, 1947)



सन् 1903-1905, दक्षिण-पूर्वी कृषि महाविद्यालय, वयी के वनस्पति विज्ञानी थे; और 1905-1924 तक, वे भारत सरकार में इम्पीरियल इकोनॉमिक बोटनिस्ट रहे। 1914 में उन्होंने कम्पेनियन ऑफ द इंडियन इम्पायर (सी.आई.ई.) का सृजन किया और उन्हें 1920 में रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स का रजत पदक मिला। वे आधुनिक जैविक कृषि के जनक के रूप में जाने जाते हैं।

सर अल्बर्ट हॉवर्ड भारत में कृषि सलाहकार के रूप में काम करते थे एवं इंदौर में एक सरकारी अनुसंधान फार्म के प्रभारी थे। उन्होंने गेबिएल मैथेई (1876-1930) और उनकी बहन लुईस (1880-1969) के साथ मिलकर काम किया। गेबिएल से उन्होंने 1905 में शादी की। उनकी मृत्यु के बाद, उन्होंने 1931 में लुईस से विवाह किया। गैब्रिएल खुद एक संव्यावसायिक प्रशिक्षित और सक्षम वनस्पतिशास्त्री थीं, और वास्तव में जैविक खेती के लिए दोनों महिलाओं का योगदान सराहनीय था। हॉवर्ड को जैविक ख़ाद का पिता कहा जाता है, जिसे पारंपरिक भारतीय ख़ाद प्रणाली के शोधन के लिए इंदौर विधि के रूप में जाना जाता है। उन्होंने जैविक कृषि तकनीकों का प्रलेखीकरण एवं विकास किया, यू. के. स्थित मृदा संघ एवं अमेरिका में रोडेल इंस्टीट्यूट के माध्यम से उन्होंने अपने ज्ञान का प्रसार किया। उनकी 1940 की पुस्तक, एन. एग्रीकल्चर टेस्टामेंट, एक उत्कृष्ट जैविक खेती की कृत है।

गेहूं अनुसंधान की शुरुआत पूसा-बिहार स्थित आई. ए. आर. आई. की प्रयोगशाला से हुई थी। जनवरी 1906 में भारत में कृषि बोर्ड द्वारा भारतीय गेहूं सुधार विषय पर विचार किया गया। यह पाया गया कि फसल पर जानकारी बहुत कम है एवं साथ ही विभिन्न कृषि-प्रतिवेदनों व अन्य प्रपत्रों में व्यापक रूप से बिखरी हुई थी, जो आमतौर पर अप्राप्य थी। मिस्टर एफ0 जी0 स्ली, आई0सी0एस0, भारत में कृषि के कार्यपालक महानिरीक्षक ने इसे 'वांछनीय' माना कि देश में प्रायोगिक प्रक्षेत्रों पर किए गए प्रयोगों के परिणाम सहित, विषय पर सभी उपयोगी जानकारी एक साथ लाई जानी चाहिए और भारत में गेहूं का एक वानस्पतिक सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। आई.ए.आर. आई. के कृषि वनस्पति विज्ञानी अल्बर्ट हॉवर्ड को 1906 में यह काम सौंपा गया था। उस अवधि में गेहूं की खेती का अधिकांश भाग व्हीट रस्ट रोग से ग्रसित था और हर साल इससे होने वाली क्षति बहुत गंभीर थी।

FATHER OF MODERN ORGANIC AGRICULTURE: SIR ALBERT HOWARD



Sir Albert Howard
(8 December, 1873 to 20 October, 1947)



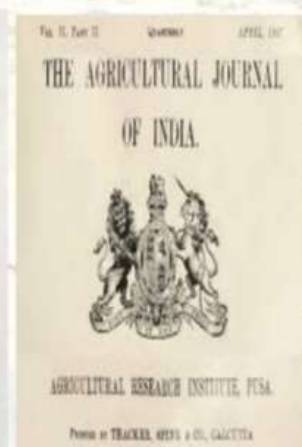
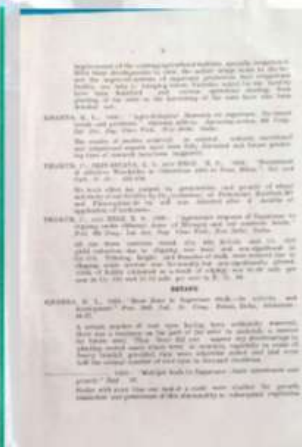
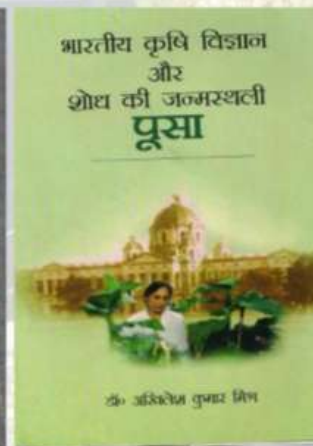
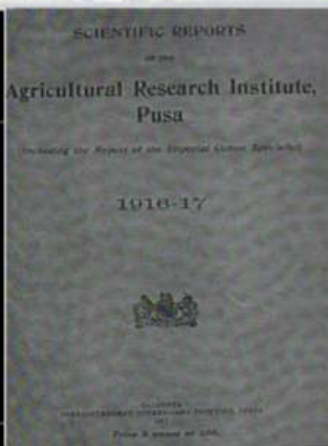
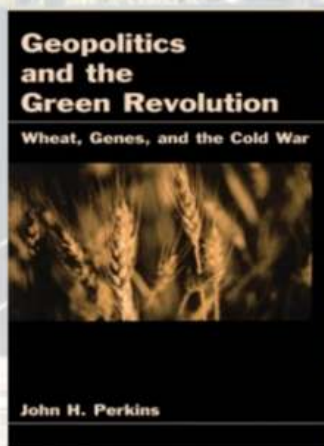
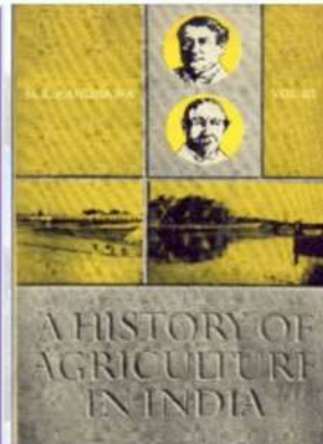
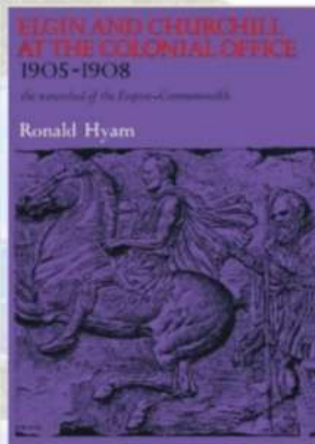
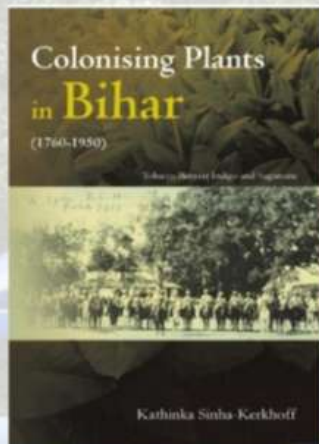
1903-1905, he was Botanist to the South-Eastern Agricultural College, Wye; and from 1905-1924, he was Imperial Economic Botanist to the Government of India. In 1914, he created a Companion of the Indian Empire (C.I.E.), received a Silver Medal of the Royal Society of Arts in 1920. He is known as Father of modern Organic Agriculture

Howard worked in India as agricultural adviser and was In-charge of a government research farm at Indore. He worked together with Gabrielle Matthaei (1876-1930) and her sister Louise (1880-1969). He married Gabrielle in 1905. After her death, he married Louise in 1931. Gabrielle was herself a professionally trained and competent botanist and indeed the contribution of both the women for organic farming was admirable. Howard is known as the father of modern composting, for refinement of a traditional Indian composting system, known as the Indore method. He went on to document and develop organic farming techniques, spread his knowledge through the UK-based Soil Association and the Rodale Institute in the US. His 1940's book, "An Agricultural Testament" is a classic organic farming text.

The wheat research started in the laboratory of IARI at Pusa, Bihar since its inception. In January 1906, the Board of Agriculture in India considered the improvement of Indian wheat. The information on the crop was found scanty and was moreover widely scattered among the various farm reports and in other papers which were usually not accessible. Mr. F.G. Sly, I.C.S., officiating Inspector General of Agriculture in India, considered that all the useful information on the subject including the results of the experiments, hitherto conducted at experimental farms in the country, should be brought together and a botanical survey of wheat should be made in India. Albert Howard, the Agricultural Botanist at IARI was entrusted with the work in 1906. Most of the wheat that was under cultivation during that period was markedly liable to rust attacks and the damage caused every year was very severe.

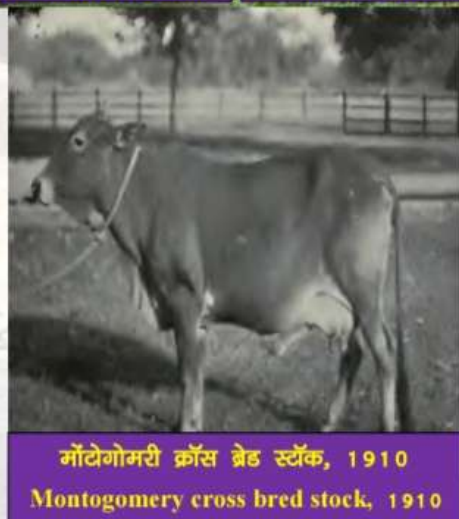
इतिहास के पन्नों से

FROM ARCHIVES.....



1934 के पूर्व पूसा प्रक्षेत्र की कुछ झलकियाँ

FEW GLIMPSE OF PUSA FARM PRE 1934 ERA



और उन्होंने ज्योति को आगे बढ़ाया AND THEY CARRIED FLAME FORWARD



और उन्होंने ज्योति को आगे बढ़ाया
AND THEY CARRIED FLAME FORWARD



आर०पी०सी०ए०यू० की यात्रा



डा० रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
पूर्व कुलपति

(अक्टूबर 7, 2016 से जून 21, 2022)



डा० पुण्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय
कुलपति

(सितम्बर 26, 2022 से)

मैनडेट :

- कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि और पशु उत्पादों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विकासशील प्रौद्योगिकियों के लिए बुनियादी, रणनीतिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान करना।
- किसानों में वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार करना।
- आधार और प्रमाणित बीजों के उत्पादन और गुण के लिए प्रजनक बीजों की आपूर्ति में राज्य सरकार की मदद करना।
- कृषि अनुसंधान और उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य लोगों के लिए अनुसंधान और विकास में परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान करना।

विजन :

- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक जरूरतों को पूरा करने और सभ्य आजीविका के लिए किसानों को विशेष सेवाएं प्रदान करने के लिए नैतिक मूल्यों के साथ कृषि और संबद्ध शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता में उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने के लिए व्यावसायिक योग्यता को बढ़ावा देना।

मिशन :

- अनुभववात्मक उच्च गुणवत्ता वाले सीखने के माहौल और एकीकृत दृष्टिकोण के निर्माण को बढ़ावा देना जो मिट्टी-पौधे-पशु-मानव के इंटरफेस के सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय महत्व की सराहना और समझ विकसित करता है।
- नवीन केंद्रित शिक्षा, अत्याधुनिक अनुसंधान, उद्यमशीलता/स्टार्ट अप कौशल विकास और उपयुक्त कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से आत्मनिर्भर मोड में कृषि हितधारकों को आकार देना।
- अनुसंधान और विकास के अग्रिम हस्तक्षेपों के माध्यम से स्थायी खाद्य उत्पादन की राष्ट्रीय/वैश्विक आवश्यकताओं का पोषण।
- उच्च उत्पादकता के माध्यम से पूर्वी भारत की कृषि जलवायु को लचीला बनाना और कृषि भूमि पर दबाव को कम करना।

JOURNEY OF RPCAU



Dr. Ramesh Chandra Srivastava
Ex-Vice-Chancellor
(October 7, 2016 to June 21, 2022)



Dr. Punyavrat Suvimalendu Pandey,
Vice-Chancellor
(September 26, 2022 to)

Mandate:

- To impart education in different branches of agriculture and allied fields.
- To undertake basic, strategic and applied research for developing technologies to enhance productivity and quality of agricultural and animal produce.
- To disseminate scientific information to farmers.
- To help the state government in supplying breeder seeds towards production and multiplication of foundation and certified seeds.
- To provide consultancy services and expertise in the agricultural research and development to the industries, NGOs and others.

Vision :

- Augmenting/Advancing professional competency for pursuing excellence in agriculture and allied education, research and entrepreneurship with ethical values to meet the Regional, National and Global needs and offering specialized services to the farmers for decent livelihood.

Mission :

- Promote experiential high quality learning environment and creation of integrated approach that develops an appreciation and understanding of the socio-economic and environmental significance of soil-plant-animal-people interface.
- Shaping agricultural stake holders into self sustaining mode through innovative centric education, cutting edge research, entrepreneurship/ start up skill development and dissemination of appropriate agricultural technology.
- Nurture national/ global needs of sustainable food production through advance interventions of research and development.
- Making Eastern India agriculture climate resilient and mitigating pressure on agricultural land through higher productivity.